सांसे हो रही हैं कम, आओ पेड़ लगायें हम

शाश्वत कृषि और वानिकी तंत्र अपनाए।
बेहतर तथा समृद्ध भविष्य पाए।

अनोखी विपणन प्रणाली: कंपनी की हरितगृहों से पौधे सीधे आपके खेत पर पहुँचाए जाते है।
कोई अतिरिक्त परिवहल शुल्क नहीं लिया जाता ।

KAUSHAL KISAN
BIO PLANTTEC PVT. LTD
GROUP OF COMPANIES KAUSHAL KISAN

(AN ISO 9001 : 2015 Certified Company)

www.kaushalkisangroup.com

नियमित रूप से प्रयासरत व कुछ नया करने की द्रढ़ इच्छा शक्ति के साथ **कौशल किसान** संस्था लेकर आयी है।

www.kaushalkisangroup.com

GUAVA

L-49

अमरूद की निम्न उन्नत किस्में उपलब्ध हैं

1. सरदार (लखनऊ–49) 2. इलाहाबाद सफेदा
3. इलाहाबाद सुर्खा 4. चित्ती दार 5. धारी दार

मिश्र फसल :अमरूद पौधों की कतारों के बीच मटर, मिर्च, बैंगन, और बारानी क्षेत्र में मोंठ और मूंग की खेती लाभदायक होती है।

सरदार (लखनऊ–49) अमरूद की विशेषताएं

1. टिश्यु कल्चर व हाइब्रिड किस्म के पौधे
2. अधिक शाखायुक्त, फेलावदार तथा अधिक फलन वाले होते है।
3. फल बड़े, उभार लिये गोल, चमकीले पीले तथा गुदा वाले होते है।
4. बीज औसत संख्या में मुलायम होते है।
5. अच्छा स्वाद एवं विटामिन – सी की प्रचुर मात्रा होती है।
6. पहले साल से ही फलोप्पादन शुरू हो जाता है।
7. फल बहुत स्वादिष्ट होते हैं।

बाग का रखरखाव

बरसात के बाद ही ज्यादातर पेड़ो के ऊपर से पत्तियां पीली होने लगती हैं व पेड़ों की शाखाएं एक के बाद एक सूखने लगती हैं इसलिए रखरखाव किया जाना चाहिए. दिसंबर से फरवरी के दौरान पेड़ो में काटछाट करने के बाद पर्याप्त मात्रा में नए कल्ले बनते है. इन कल्लों के फेलाव व विकास के लिए मई जून में प्रबंधन किया जाना चाहिए. इस से जाड़े में फसल अच्छी होती है इसी प्रकार मई में काटछांट कर ठीक किए गए पेड़ो से निकलने वाले कल्लो का प्रबंधन अक्टूबर में किया जाना चाहिए. ऐसा करने से बरसात में फसल अच्छी होती है.

सावधानिया

1. पौधे को प्राप्त करने के दस दिन के अन्दर पौधे को लगाना अनिवार्य है।
2. पौधे लगाने के लिए (11/2x11/2x11/2x) जमीन में 1 फिट गड्ढा खोदकर पौधा लगाना चाहिए।
3. इस तरह खोदे गये गड्ढे में पौधा रोप दीजिये।
4. पौधे के बीच में उचित दूरी अवश्य बनायें रखे।

www.kaushalkisangroup.com

(AN ISO 9001 : 2015 Certified Company)

सांसे हो रही हैं कम,
आओ पेड़ लगायें हम

अमरूद की खेती

अमरूद को अंग्रेजी में ग्वावा कहते हैं। वानस्पतिक नाम सीडियम ग्वायवा, प्रजाति सीडियम, जाति ग्वायवा, कुल मिटसी)। वैज्ञानिकों का विचार है कि अमरूद की उत्पति अमरीका के उष्ण कटिबंधीय भाग तथा वेस्ट इंडीज़ से हुई है। भारत की जलवायु में यह इतना घुल मिल गया है कि इसकी खेती यहाँ अत्यंत सफलतापूर्वक की जाती है। पता चलता है कि 17 वीं शताब्दी में यह भारतवर्ष में लाया गया। अधिक सहिष्ण होने के कारण इसकी सफल खेती अनेक प्रकार की मिट्टी तथा जलवायु में की जा सकती है। जाड़े की ऋतु मे यह इतना अधिक तथा सस्ता प्राप्त होता है कि लोग इसे निर्धन जनता का एक प्रमुख फल कहते हैं। यह स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभदायक फल है। इसमें विटामिन "सी' अधिक मात्रा में पाया जाता है। इसके अतिरिक्त विटामिन "ए' तथा "बी' भी पाए जाते हैं। इसमें लोहा, चूना तथा फास्फोरस अच्छी मात्रा में होते हैं। अमरूद की जेली तथा बर्फी (चीज) बनाई जाती है।

(AN ISO 9001 : 2015 Certified Company)

सांसे हो रही हैं कम,
आओ पेड़ लगायें हम

जलवायु

अमरूद के लिए गर्म तथा शुष्क जलवायु सबसे अधिक उपयुक्त है। यह गरमी तथा पाला दोनों सहन कर सकता है। केवल छोटे पौधे ही पाले से प्रभावित होते हैं। यह हर प्रकार की मिट्टी में उपजाया जा सकता है, परंतु बलुई दोमट इसके लिए आदर्श मिट्टी है। भारत में अमरूद की प्रसिद्ध किस्में इलाहाबादी सफेदा लाल गूदेवाला, चित्तीदार, करेला, बेदाना तथा अमरूद सेब हैं।

(AN ISO 9001 : 2015 Certified Company)

सांसे हो रही हैं कम,
आओ पेड़ लगायें हम

भूमि

अमरूद को लगभग प्रत्येक प्रकार की भूमि में उगाया जा सकता है। परंतु अच्छे उत्पादन में उपजाऊ बलुई दोमट भूमि अच्छी रहती है। बलुई भूमि मिटटी 4.5 में पीएच मान तथा चूनायुक्त भूमि में 8.2 पीएच मान पर भी इसे सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। अधिक तापमान 6 से 6.5 पीएच मान पर प्राप्त होता है। कभी कभी क्षारीय भूमि में उकठा रोग के लक्षण नजर आते है। इलाहाबादी सफेदा में 0.35 % खारापन सहन करने कि क्षमता रहती है ।

KAUSHAL KISAN
GROUP OF COMPANIES KAUSHAL KISAN
(AN ISO 9001 : 2015 Certified Company)

सांसे हो रही हैं कम,
आओ पेड़ लगायें हम

प्रजातियां

अमरूद की प्रमुख किस्में जो बागवानी के लिए उपयुक्त पायी गयी वे इस प्रकार हैं। इलाहाबादी सफेदा, सरदार 49 लखनऊ, सेबनुमा अमरूद, इलाहाबादी सुरखा, बेहट कोकोनट आदि हैं। इसके अतिरिक्त चित्तीदार, रेड फ्लेस्ड, ढोलका, नासिक धारदार, आदि किस्में हैं। इलाहाबादी सफेदा बागवानी हेतु उत्तम है। सरदार-49 लखनऊ व्यावसायिक दृष्टि से उत्तम प्रमाणित हो रही है। इलाहाबादी सुरखा अमरूद की नयी किस्म है। यह जाति प्राकृतिक म्युटेंट के रूप में विकसित हुई है।

KAUSHAL KISAN
BIO PLANTTEC PVT LTD
GROUP OF COMPANIES KAUSHAL KISAN

(AN ISO 9001 : 2015 Certified Company)

सांसे हो रही हैं कम,
आओ पेड़ लगायें हम

पौध-रोपण

पौध रोपण से पूर्व भूमि को अच्छी तरह जुताई कर के समतल कर लेना चाहिए। उसके 6.0 गुना 6.0 मीटर की दूरी पर 60 गुना 60 सेमी के 20 से 25 गड्ढों में 1 किलोग्राम सडी हुई गोबर की खाद और आर्गनिक खाद और ऊपरी मिट्टी मिश्रण में मिलाकर गड्ढे को अच्छी तरह से भर देते हैं। इसके बाद खेत की सिंचाई कर देते हैं, जिससे की गड्ढे की मिटटी बैठ जाये। इस प्रकार पौधा लगाने के लिए गड्ढा तैयार हो जाता है। इसके बाद जरूरत के अनुसार गड्ढा खोदकर उसके बीचों बीच लगाकर चारों तरफ से अच्छी प्रकार दबाकर फिर हलकी सिंचाई कर देते हैं।

KAUSHAL KISAN
BIO PLANTTEC PVT LTD
GROUP OF COMPANIES KAUSHAL KISAN
(AN ISO 9001 : 2015 Certified Company)

सांसे हो रही हैं कम,
आओ पेड़ लगायें हम

सिंचाई

पौधे में सिंचाई शरद ऋतु में 15 दिन के अंतर पर तथा गर्मियों में 7 दिन के अंतर पर करते रहना चाहिए। जब कि फल देने वाले पौधे से फल लेने के समय को ध्यान म रखकर सिंचाई करनी चाहिए। उदहारण के लिए बरसात में फसल लेने के लिए गर्मी में सिंचाई की जाती है। जब कि सर्दी में अधिक फल लेने के लिए गर्मी में सिंचाई नहीं करनी चाहिए।

खर-पतवार नियंत्रण

नव स्थापित उडान में 10 से 15 दिन के अंतर पर थाले की निराई-गुडाई करके खर-पतवार को निकलते रहते हैं। जब पौधे बबड़े हो जायें। तब वर्षा ऋतु में बाग की जुताई कर देते हैं। जिससे खर-पतवार नष्ट हो जाते हैं।

कीट नियंत्रण

अमरूद में कीड़े व बीमारी का प्रकोप मुख्य रूप से वर्षा ऋतु में होता है। जिससे पौधों में वृद्धि तथा फलों की गुणवत्ता दोनों पर बुरा प्रभाव पडता है। अमरूद के पेड में मुख्य रूप से छाल खाने वाले कीड़े, फल छेदक, फल में अंड़े देनेवाली मक्खी, शाखा बेधक आदि कीट लगते हैं। इन कीटों के प्रकोप से बचने के लिए नीम की पत्तियों की उबले पानी का छिडकाव करना चाहिए। आवश्यकता पडने पर कीट लगे पौधे को नष्ट कर देना चाहिए।

रोग नियंत्रण

अमरूद में बीमारियों का प्रकोप मुख्य रूप से वर्षा ऋतु में होता है, जिससे की पौधों कि वृद्धि तथा फलों की गुणवत्ता दोनों पर बुरा प्रभाव पडता है। अमरूद के प्रमुख रोग उकठा रोग, तना कैंसर आदि हैं। भूमि की नमी भी उकठा रोग को फैलाने में सहायक होती है। रोगी पौधे को तुरंत निकाल कर नष्ट कर देना चाहिए। तना कैंसर रोग फाइसेलोस्पोरा नामक कवक द्वारा होता है। इसकी रोकथाम के लिए रोग ग्रसित डालियों को काटकर जाला देना चाहिए तथा कटे भाग पर ग्रीस लगा कर बंद कर देना चाहिए।

KAUSHAL KISAN
GROUP OF COMPANIES KAUSHAL KISAN
(AN ISO 9001 : 2015 Certified Company)

सांसे हो रही हैं कम,
आओ पेड़ लगायें हम

फलों की तुड़ाई और उपज

फूल आने के लगभग 120-140 दिन बाद फल पकने शुरू हो जाते हैं। जब फलों का रंग हरा से हल्का पीला पडने लगे तब इसकी तुडाई करते हैं। अमरूद की उपज किस्म, देख-रेख और उम्र पर निर्भर होती है। एक पूर्ण विकसित अमरूद के पौधे से प्रतिवर्ष 400 से 600 फल तक प्राप्त होते हैं। जिनका वजन 125 से 150 किलो ग्राम होता है। इसकी भंडारण क्षमता बहुत ही कम होती है। इसलिए इनकी प्रति दिन तुडाई करके बाजार में भेजते रहना चाहिए।

बसंत ऋतू के फूलों◌ं को नियंत्रित करने के लिये विभिन्न प्रकिया

बसंत ऋतू के फूलों को नियंत्रित करने के लिये विभिन्न प्रकिया अपनायी जाती है जो कि निम्नलिखित है-

सिंचाई पानी को रोक कर

इस प्रकिया मे पेड़ों को गर्मी मे (फरवरी- मध्य मई) पानी नही दिया जाता जिससे पत्तियां गिर जाती हैं एवं पेड़ सुसुप्तावस्था मे चले जाते हैं। इस समयावधि मे पेड़ अपनी शाखाओ मे खाघ पदार्थ का संरंक्षण करते है। इसके बाद मध्य मई मे बगीचो की गुड़ाई करके व खाद देने के बाद सिंचाई की जाती है, जिससे 25-30 दिनो बाद प्रथम प्रकार मे अधिक मात्रा मे फूल खिलते एवं शरद ऋतु मे फल तैयार हो जाते है।

जड़ों के पास की मृदा को निकाल कर

इस विधि मे जड़ो के आस-पास की ऊपरी मृदा को अप्रेल-मई मे सावधानी पूर्वक खोदकर बाहर निकाल दिया जाता है। इससे जड़ो को सूर्यप्रकाश अधिक मात्रा मे प्राप्त होता है, जिसके परिणामस्वरूप मृदा मे नमी की कमी हो जाती है एवं पत्तियां गिरने लगती है एवं पेड़ सुसुप्तावस्था मे चले जाते हैं। 20-25 दिनो बाद जड़ों को मिट्टी द्वारा फिर से ढंक दिया जाता है एवं खाद देकर सिंचाई कर दिया जाता है।

(AN ISO 9001 : 2015 Certified Company)

सांसे हो रही हैं कम,
आओ पेड़ लगायें हम

पेड़ों को झुकाकर

जिस पेड़ की शाखाएं सीधी रहती है वह बहुत कम फलने देती है अतः ऐसे पेड़ो की सीधी शाखाओ को अप्रेल-जून माह मे झुकाकर जमीन मे बांस या खूंटा गाड़कर रस्सी की सहायता से बांध दिया जाता है एवं शाखाओ की शीर्ष ऊपरी 10-12 जोड़ी पत्तियो को छोड़कर अन्य छोटी-छोटी शाखाओ, पत्तियो, फूलों व फलो को कांट छांटकर अलग कर दिया जाता है। जिससे झुकाने के बाद मुख्य शाखाओ मे 10-15 दिनो के अंदर सहायक छोटी शाखाएं आ जाती है एवं निष्क्रिय कलियां भी सक्रिय हो जाती है। झुकाने के 40-45 दिनों बाद अधिक मात्रा मे फूल आने लगते है व फलने अच्छी प्राप्त होती है।

फूलों को झड़ा कर

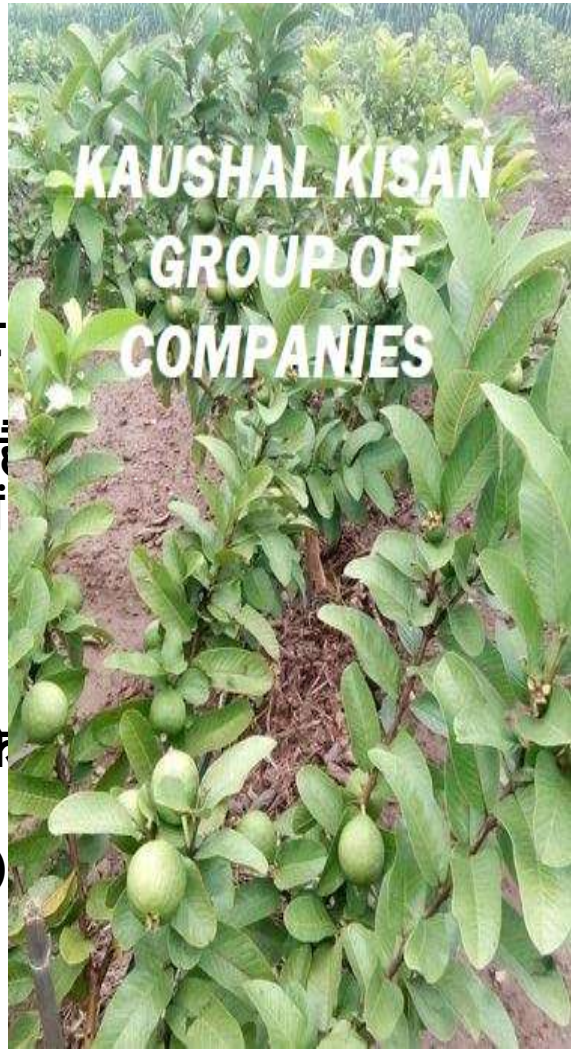

इस विधि मे ऐसे प्रकार जिनमे हमे फल नही चाहिये उक्त प्रकार के फूलों के खिलने पर उसे झड़ाने के लिये कुछ वृद्धि नियामको जैसे एन।ए।ए (1000 पी.पी.एम), नेप्थिलिन एसिटामाईड (50 पी.पी.एम), 2-4-डी (50-100 पी.पी.एम) एवं यूरिया (10 प्रतिशत) आदि का छिड़काव के रूप मे प्रयोग किया जाता है।

KAUSHAL KISAN
BIO PLANTTEC PVT LTD
GROUP OF COMPANIES KAUSHAL KISAN
(AN ISO 9001 : 2015 Certified Company)

सांसे हो रही हैं कम,
आओ पेड़ लगायें हम

खाद/उर्वरकों का प्रयोग

जून के महीने मे उर्वरकों का प्रयोग करके आने वाले प्रथम प्रकार में फूलों की संख्या को बढ़ाया जा सकता है। अतः इन प्रकियाओ को अपनाकर किसान अच्छी,ज्यादाएवं गुणवत्तायुक्त फलने प्राप्त कर सकता है जिसे बेचकर वह उचित बाजार मूल्य प्राप्त कर सकता है एवं आर्थिक रूप से सुदृढ़ हो सकता है।

www.kaushalkisangroup.com

KAUSHAL KISAN
BIO PLANTTEC PVT LTD
GROUP OF COMPANIES KAUSHAL KISAN
(AN ISO 9001 : 2015 Certified Company)

सांसे हो रही हैं कम,
आओ पेड़ लगायें हम

कौशल किसान ग्रुप ऑफ़ कम्पनी द्वारा किसानों को मुफ्त में दी जाने वाली सेवाएं :-

➢पौधों को किसानो के घर या खेत तक पहुंचाने के लिए मुफ्त वाहन सुविधा उपलब्ध करवाई जाती है।

➢क्षतिग्रस्त पौधों की प्रतिस्थापना। यह सुबिधा सिर्फ एक बार के प्रतिस्थापन के लिए होती है ।

➢ २ साल तक कंपनी के कर्मचारियों द्वारा समय समय पर देखभाल की सुविधा दी जाती है।

➢किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए हमारे प्रतिनिधियों से मुफ्त तकनिकी सेवा फ़ोन द्वारा या ब्यक्तिगत रूप में ले सकते हैं

➢किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए कम्पनी का टोल फ्री नंबर उपलब्ध है -18001236246

www.kaushalkisangroup.com

(AN ISO 9001 : 2015 Certified Company)

(AN ISO 9001 : 2015 Certified Company)

**Corp. Office : H.No. 265, Opp.Tejaji Ka Mandir,
Khedli Phatak, Kota Raj. - 324001 | Ph.: 0744 2323168**

Branch Office : Plot.No. 194, R K Business Centre, Near, Shivaji Nagar, Nagpur, Maharashtra - 440010

Branch Office : Malaviya Chowk, Wing - B, 7th Floor, Ofiice No. 5, Gondal Road, Rajkot (GUG)

Branch Office : Near Agarwal Dharamshala, Sec. 11, Hiran Mangri, Udaipur Rajasthan - 313001

Toll Free No. 18001236246 | **Website : www.kaushalkisan.com | www.navjeevanbio.com**